दर जो तेरा है पाया | By Akshit Mitt

दर जो तेरा है पाया तो किस्मत खुल उठी है
भंवर में मेरी नैया अब तो रूकती नहीं है
दर जो तेरा है पाया .....

भटकता था मैं दर दर न कोई था हमारा
मिला मुझको तू ऐसे जैसे तिनके को सहारा
हाथ को पकड़ के तूने दया ही दया करी है
भंवर में मेरी नैया अब तो रूकती नहीं है
दर जो तेरा है पाया .....

बड़ी बंजर थी किस्मत फूलों का ना ठिकाना
मैं था एक ऐसा राही जो था रस्तो से बेगाना
तूने बगिया महकाई राह अब दिख गई है
भंवर में मेरी नैया अब तो रूकती नहीं है
दर जो तेरा है पाया .....

सुना कलिकाल में बस तुम्ही हो पालनहारा
प्रमोद का ओ बाबा तुम्ही से चले गुज़ारा
अक्षित को अब सही में ये जो ज़िन्दगी मिली है
भंवर में मेरी नैया अब तो रूकती नहीं है
दर जो तेरा है पाया .....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a6%e0%a4%b0-%e0%a4%9c%e0%a5%8b-%e0%a4%a4%e0%a5%87%e0%a4%b0%e0%a4%be-%e0%a4%b9%e0%a5%88-%e0%a4%aa%e0%a4%be%e0%a4%af%e0%a4%be-by-akshit-mitt/